Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

शास्त्रीय संगीत तथा संवेदना के मध्य सम्बन्ध - भाव तथा रस के विशेष सन्दर्भ में

MANJUL KUMAR[1] & DR.RAJEEV SHARMA[2]

1 Ph.D Research Scholar, Music Department, Himachal Pradesh University, Shimla
2 Assistant Professor, Department Of Music, Himachal Pradesh University, Shimla

सार

संगीत एक ऐसी कला है जिसके अभाव में मानव जीवन अपूर्ण है। जिस प्रकार जल के बिना मछली जीवित नहीं रह सकती उस ही प्रकार संगीत के बिना मानव जीवित तो रह सकता है, लेकिन मानव आत्मा के अंदर भाव तथा संवेदनाओं की कमी स्वतः ही दिखाई देगी। इस बात को कहने में अतिश्योक्ति नहीं हो सकती कि संगीत का प्रभाव सीधे तौर पर मानव के दिल व दिमाग पर होता है। संगीत मानव के मन को शांति प्रदान करने तथा स्वभाव में स्थिरता बनाए रखने में अपनी अहम् भूमिका निभाता है। संगीत में वो शक्ति है जो मनुष्य को पल भर में विचलित कर सकती है। मान लिया जाए अगर किसी दिन व्यक्ति की मनःस्थिति अथवा मूड ठीक नहीं है और अगर वो उस परिस्थिति में दुःख भरे गीत सुन ले तो स्वतः ही उस की आँखों से अश्रुओं की धारा निकलनी प्रारम्भ हो सकती है। इस ही परिस्थिति में यदि वही मनुष्य अपनी पसंद के उत्साहपूर्ण गीत सुन ले तो यह भी संभव हो सकता है कि उस व्यक्ति का मूड ठीक हो जाए। इस सम्पूर्ण विश्व में संगीत की अनेकों प्रकार की विधाएँ हैं जो स्थान, घटनाओं तथा परम्पराओं व रीति-रिवाजों के अनुसार निर्मित की गयी हैं। इस ही प्रकार भारत में भी विश्वविख्यात संगीत विधा का निर्माण व विकास हुआ जिसे आज भारतीय शास्त्रीय संगीत के नाम से जाना जाता है। इस विधा के अनुसार कुछ निश्चित नियमों तथा बंधनो के अंतर्गत गायन, वादन व नृत्य किया जाता है, जिसकी साधना करना कठिन है। कठोर परिश्रम व निःस्वार्थ भाव से साधना करने के उपरान्त ही शास्त्रीय संगीत की विधाओं का प्रस्तुतीकरण दर्शकों के सम्मुख किया जाता है। शास्त्रीय संगीत तथा संवेदना के मध्य गहन सम्बन्ध है। संवेदना भाव का ही एक रूप है तथा संवेदना के अभाव में शास्त्रीय संगीत की कल्पना करना संभव नहीं क्योंकि भारतीय शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत प्रत्येक राग की अपनी प्रकृति, भाव तथा रस है। भाव तथा रस के अभाव में संगीत की उतपत्ति होना संभव नहीं तथा वह मात्र शोर कहलाएगा। शास्त्रीय संगीत की संवेदना को जानने के लिए मनुष्य का स्वयं भी संवेदनशील होना आवश्यक है तथा इस ही संवेदनशीलता के माध्यम से व्यक्ति अन्य वक्तियों में भी शास्त्रीय संगीत के प्रति संवेदना का भाव जागृत कर सकता है।

बीज शब्द:- शास्त्रीय संगीत, संवेदना, भाव, रस

भूमिका

शास्त्रीय संगीत

भारतवर्ष सम्पूर्ण विश्व में अपनी अनूठी व समृद्ध संस्कृति के लिए जाना जाता है। यह देश धार्मिक भावनाओं से जुड़ा देश है। यहां किसी भी कार्य को करने से पूर्व परम्पिता परमेश्वर को याद किया जाता है। संस्कृत के एक श्लोक में यह कहा गया है कि: -

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव विद्या द्रविणम त्वमेव, त्वमेव सर्वम मम देव देव ।।

इस श्लोक में यह स्पष्ट बताया गया है कि ईश्वर ही हमारा सर्वस्व है। अर्थात परमात्मा से बढ़कर कुछ नहीं है। भारतवर्ष के विचारकों के अनुसार संगीत की उत्पत्ति देवी-देवताओं से मानी गई है। कहा जाता है कि देवी-देवताओं के द्वारा जिस संगीत की उत्पत्ति की गई उसे वर्तमान में दक्षिणी अथवा कर्नाटकी संगीत पद्धति के नाम से जाना जाता है। कालांतर में

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

उत्तर भारत में इसी पद्धति से निकल कर एक अन्य पद्धति उभर के आई जिसे वर्तमान में उत्तर भारतीय संगीत पद्धति के नाम से भी जाना जाता है, जिसका रसास्वादन श्रोतागण आज भी करते हैं।

संवेदना

संवेदना हमारे मन के अंदर समाहित ऐसी भावना है जिसके माध्यम से मानव मन में स्वयं के साथ-साथ अन्यों के प्रति साहनुभूतिपूर्ण भावनाएं जागृत होती हैं। यह संवेदनाएं बाह्य तथा आतंरिक दोनों हो सकती हैं। बाह्य संवेदना जिसे हम बाह्य रूप से अर्थात पीड़ा, कष्ट, थकान आदि के रूप में महसूस कर सकते हैं। इसी प्रकार आतंरिक संवेदना हमारे मन के अंदर उत्पन्न होती है। आतंरिक संवेदना हमारे अंदर किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, कला आदि के प्रति उत्पन्न हो सकती है। कुछ विचारकों के अनुसार संवेदना से अभिप्रायः सहानुभूति तथा समर्पितत्ता से भी माना गया है । शास्त्रीय संगीत का कलाकार अपने गायन तथा वादन में राग की अनुकूलता के अनुसार आलाप, गमक, खटके, मींड, झाले एवं तानों आदि के माध्यम से भाव व रस उत्पन्न कर के अपनी आंतरिक संवेदनाओं को श्रोताओं के मध्य प्रस्तुत करता है । इसी प्रकार नर्तक अपने चेहरे व शारीरिक भावों के माध्यम से आंतरिक संवेदनाओं को व्यक्त करता है । एक संवेदनहीन व्यक्ति शास्त्रीय संगीत का प्रस्तुतीकरण कर ही नहीं पाएगा क्यूंकि शास्त्रीय संगीत में भाव तथा रस का समावेश है।

रस

रस शास्त्रीय संगीत का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है। रस का संबंध सीधे रूप में हमारी आत्मा में नीहित आंतरिक भावों से है। रस को कला का महत्वपूर्ण घटक माना जाता है। रस प्रधान काव्य तथा संगीत श्रवणेंद्रियों के माध्यम से मन में आनंद की अनुभूति करवाता है। यही आनंद की अनुभूति रस कहलाती है । अन्य अर्थ के अनुसार रस का अर्थ निचोड़ माना जाता है। कला के संदर्भ में यदि बात की जाए तो वास्तविक रूप में ही संगीत का निचोड़ रस है। जब हम किसी सुंदर मूर्ति या चित्र को देखते हैं अथवा किसी कलाकार द्वारा प्रस्तुत अच्छा गायन, वादन तथा नृत्य सुनते अथवा देखते हैं तो हमें आनंद कि अनुभूति होती है, ये अनुभूति रस प्रधान कला से ही हो सकती है।

भाव तथा रस

तत्र विभावानुभावव्यभिचारी संयोगद्रसनिष्पत्ति

उपरोक्त श्लोक भाव तथा रस के संबंध को व्यक्त करता है अर्थात भाव, अनुभाव, विभाव, संचारी भावों के संयोग से रस कि निष्पत्ति होती है । एक सूत्र में रस की निष्पत्ति का आख्यान है, किन्तु रस के स्वरूप का विवेचन भी इसी में नीहित है।

भरतमुनि का रस सिद्धान्त

रस का प्रथम परिचय नाट्यशास्त्र में देखने को मिलता है, जिसमें भरतमुनि द्वारा रस के स्वरूप, निष्पत्ति तथा रसानुभूति के विषय में विस्तृत वर्णन किया है । कवि तथा नाट्य पर आधारित नाट्यशास्त्र में भरतमुनि ने सबसे पहले रस के बारे में उल्लेख किया है । भरतमुनि ने आठ ‘ रस ‘ एवं ‘ आठ स्थायी ‘ भाव माने हैं जो इस प्रकार हैं:

स्थाई भाव	रस
1) रति	श्रृंगार रस
2) हास	हास्य रस

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

3) उत्साह	वीर रस
4) क्रोध	रौद्र रस
5) विस्मय	अद्भुत रस
6) भय	भयानक रस
7) जुगुप्सा	वीभत्स रस
8) शोक	करुण रस

मुख्य रूप से रसों की संख्या 9 है , लेकिन वात्सल्य और भक्ति रस होने के कारण रसों की कुल संख्या 11 है। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में नौवें रस शांत रस का उल्लेख नहीं किया है क्यूंकि नाटक में शांत रस प्रयुक्त नहीं होता। इन सभी रसों का उल्लेख इस प्रकार है:

1) श्रृंगार रस:

श्रृंगार रस मुख्य रूप से संयोग तथा वियोग दो भागों में विभाजित है। संयोग शृंगार में सौंदर्य की प्रधानता रहती है , जिस में नायक-नायिका के मिलन का उल्लेख होता है। श्रृंगार रस प्रधान संगीत के शब्दों में नायक को देख कर नायिका का शर्माना, नायिका कि सुंदरता का उल्लेख मुख्य रूप से होता है। इसी प्रकार वियोग शृंगार में विरह तथा मिलन के बारे में वर्णन किया जाता है।

2) हास्य रस:

हास्य रस प्रधान गीतो में मुख्य रूप से हास्य सम्बन्धित शब्दों का प्रयोग किया जाता है। वर्तमान में इस रस का प्रयोग अधिकतर कवि सम्मेलनों में किया जाता है। इन हास्य कवि सम्मेलनों में किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि का मुख्य रूप से मजाक के तौर पर हास्य हेतु प्रस्तुतीकरण किया जाता है।

3) वीर रस:

वीर रस उत्साहपूर्ण रस होता है। वीर रस प्रधान गीतों में मुख्यतया वीरता का उल्लेख किया जाता है। भरत मुनि के मतानुसार वीर रस से ही अद्भुत रस पैदा होता है। देश प्रेम व देश भक्ति के गीतों में मुख्य रूप से वीर रस का प्रयोग किया जाता है।

4) रौद्र रस:

यह रस क्रोध से भरा होता है अर्थात इसका स्थायी भाव क्रोध है। शिव तांडव नृत्य में इसका उदाहरण स्पष्ट रूप से हमें देखने को मिलता है, जिसमें गायन और वादन करते समय रौद्र रस के वादनों का प्रयोग कर प्रस्तुतीकरण किया जाता है।

5) भयानक रस:

भयानक रस का स्थायी भाव भय है। जब मनुष्य किसी अनहोनी या अपराध को देखते हैं तो भयभीत हो जाते हैं जिससे मन के अंदर डर पैदा हो जाता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

6) अद्भुत रस:

अद्भुत रस हैरान होने, आश्चर्यचकित हो जाने पर उत्पन्न होता है। जब हम अचानक से कुछ ऐसा देख लेते हैं जिसे देख कर हमे विश्वास नहीं होता तो उस से हमारे मन में विस्मय स्थायी भाव के रूप में पैदा हो जाता है , वही अद्भुत रस कहलाता है।

7) वीभत्स रस:

जब किसी व्यक्ति के जीवन में किसी के प्रति घृणा या ईर्ष्या का भाव उत्पन्न होता है तो वीभत्स रस कि उत्पत्ति होती है।

8) करूण रस:

करुण रस करुण भावना का परिचायक है। जब मनुष्य को दुःख होता है तो वह स्वाभाविक रूप से अत्यधिक संवेदनशील हो जाता है तथा उसके अंदर हमदर्दी एवं आत्मीयता की भावना जागृत हो जाती है , जिससे करुण रस कि उत्पत्ति होती है।

9) शांत रस:

शांत रस शांति का परिचायक है। साहित्यिक विद्वानो द्वारा इस रस को सर्वोपरी माना गया है। इसे सांसारिक मोह माया को त्याग मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया है।

10) वात्सल्य रस

इस रस के अंतर्गत नन्हें बालक या बालिकाओं के प्रति उनके माता-पिता द्वारा प्रेम भाव दिखाया जाता है। भारतीय संगीत में श्री कृष्ण के बचपन के समय उनके प्रति उनकी माँ के प्रेम का वर्णन अनेक प्रकार के गीतों में किया गया है।

11) भक्ति रस

भारत देवी-देवताओं का देश है। भारतीय संगीत में इस रस का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। ईश्वर के प्रति भक्तिपूर्ण भावना, ईश्वर के प्रति रति तथा प्रेम आदि भावों से भक्ति रस उत्पन्न होता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में भगवान शिव, माँ दुर्गा, गणेश जी की भक्ति से संबन्धित अनेकों बन्दिशें गाई व बजाई जाती हैं।

उपरोक्त रसों के विवेचन के पश्चात स्वतः ही यह कहा जा सकता है कि शास्त्रीय संगीत में रस पूर्ण रूप से समाहित है। रागों की अनुकूलता के अनुसार उपयुक्त रसों के अंतर्गत भारतीय संगीत के अनेकों राग तथा बन्दिशें बनाई गई हैं जिन्हें कलाकार अपने स्वर लगाने के तरीक तथा हाव-भाव से दर्शकों एवं श्रोताओं के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। रस की निष्पत्ति कलाकार या लेखक की योग्यता पर भी निर्भर करती है। उदाहरणार्थ यदि कोई लेखक वीर रस में कोई बंदिश बना दे तथा कलाकार उसी बंदिश को करुण रस में स्वरलिपिबद्ध कर के प्रस्तुत करे तो रस की उत्पत्ति संभव नहीं हो पाएगी।

निष्कर्ष

रागों की मालाओं से सुसज्जित, वाद्य तथा तालों की गूँज से प्रदर्शित शास्त्रीय संगीत अन्य सांज्ञीतिक विधाओं की तुलना में सर्वोपरि संगीत है, जिसमें भारतीय सभ्यता, परम्पओं, रीति रिवाजों, घटनाओं आदि का अतुलनीय समावेश है। रस प्रधान शास्त्रीय संगीत की संवेदना भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में संवर्धित हो गयी है। संवेदना तथा संगीत के मध्य गहन नाता है। मनोभावों तथा व्यक्तिगत संवेदनाओ को लेखक अपनी कलम से लिखता है तत्पश्चात कलाकार उसे सुरों में पिरो कर तालबद्ध तरीके से दर्शकों एवं श्रोताओं के सम्मुख प्रदर्शित करते हैं। एक ओर शास्त्रीय संगीत में मानवीय संवेदनाएं सम्मिलित हैं, तो दूसरी ओर भारत के इतिहास में घटित घटनाओं की जानकारियाँ तथा संवेदनाएँ भी

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

श्रोताओं को शास्त्रीय संगीत के माध्यम से देखने व सुनने को मिलती हैं। इस विधा से सम्बंधित कलाकारों के अंदर एक विभिन्न प्रकार की सभ्य व सरल व्यक्तित्व झलकता है। लेकिन दुःख की बात ये भी है कि आज हमारे देश की अधिकतम जनता शास्त्रीय संगीत की इस अमूल्य निधि को नकार कर पाश्चात्य सभ्यता के संगीत को अपनाने लगी है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के संरक्षण व संवर्धन की आवश्यकता है, अन्यथा यह विधा लुप्त हो जायेगी।

संदर्भ

शिखा स्नेही, आकांक्षा सारस्वत (2012) , संगीत, अरिहंत पब्लिकेशन (इंडिया) लिमिटिड, पृ०-47

अरिहंत एक्सपर्ट (2021), हिन्दी भाषा एवं शिक्षा शास्त्र , अरिहंत पब्लिकेशन (इंडिया) लिमिटिड, पृ०- 57